एकलव्य

नाना-नानी

NCERT Suggested

घनश्याम तिवारी
चित्र धनंजय

नाना-नानी

एक लम्बी कविता

घनश्याम तिवारी

चित्र धनंजय

एकलव्य

नाना-नानी
NANA-NANI

लेखक: घनश्याम तिवारी
चित्र: धनंजय

© एकलव्य/घनश्याम तिवारी/धनंजय

पहला संस्करण: दिसम्बर 2006 (3000 प्रतियाँ)
25,000 प्रतियाँ प्रकाशित व वितरित
ग्यारहवाँ पुनर्मुद्रणः अगस्त 2016 (3000 प्रतियाँ)
बारहवाँ पुनर्मुद्रणः मार्च 2017 (3000 प्रतियाँ)
तेरहवाँ पुनर्मुद्रणः सितम्बर 2017 (5000 प्रतियाँ)
चौदहवाँ पुनर्मुद्रणः अक्तूबर 2018 (5000 प्रतियाँ)
पन्द्रहवाँ पुनर्मुद्रणः अगस्त 2019 (31,000 प्रतियाँ)
सौलहवाँ पुनर्मुद्रणः जुलाई 2021 (3000 प्रतियाँ)
सत्रहवाँ पुनर्मुद्रणः जुलाई 2022 (5000 प्रतियाँ)
अठारहवाँ पुनर्मुद्रणः मई 2023 (5000 प्रतियाँ)
उन्नीसहवाँ पुनर्मुद्रणः सितम्बर 2024 (5000 प्रतियाँ)
कागज़: 70 gsm नेचुरल शेड व 220 gsm पेपर बोर्ड (कवर)
ISBN: 978-81-87171-87-4
मूल्य: ₹ 30.00

प्रकाशक: **एकलव्य फाउंडेशन**
जमनालाल बजाज परिसर
जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोन: +91 755 297 7770-71-72
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रक: भण्डारी प्रेस, भोपाल (मप्र)

नाना जी नानी से बोले,
अगर कहीं पा जाऊँ घोड़ा,
तुमसे हो जाऊँ में ऊँचा थोड़ा।

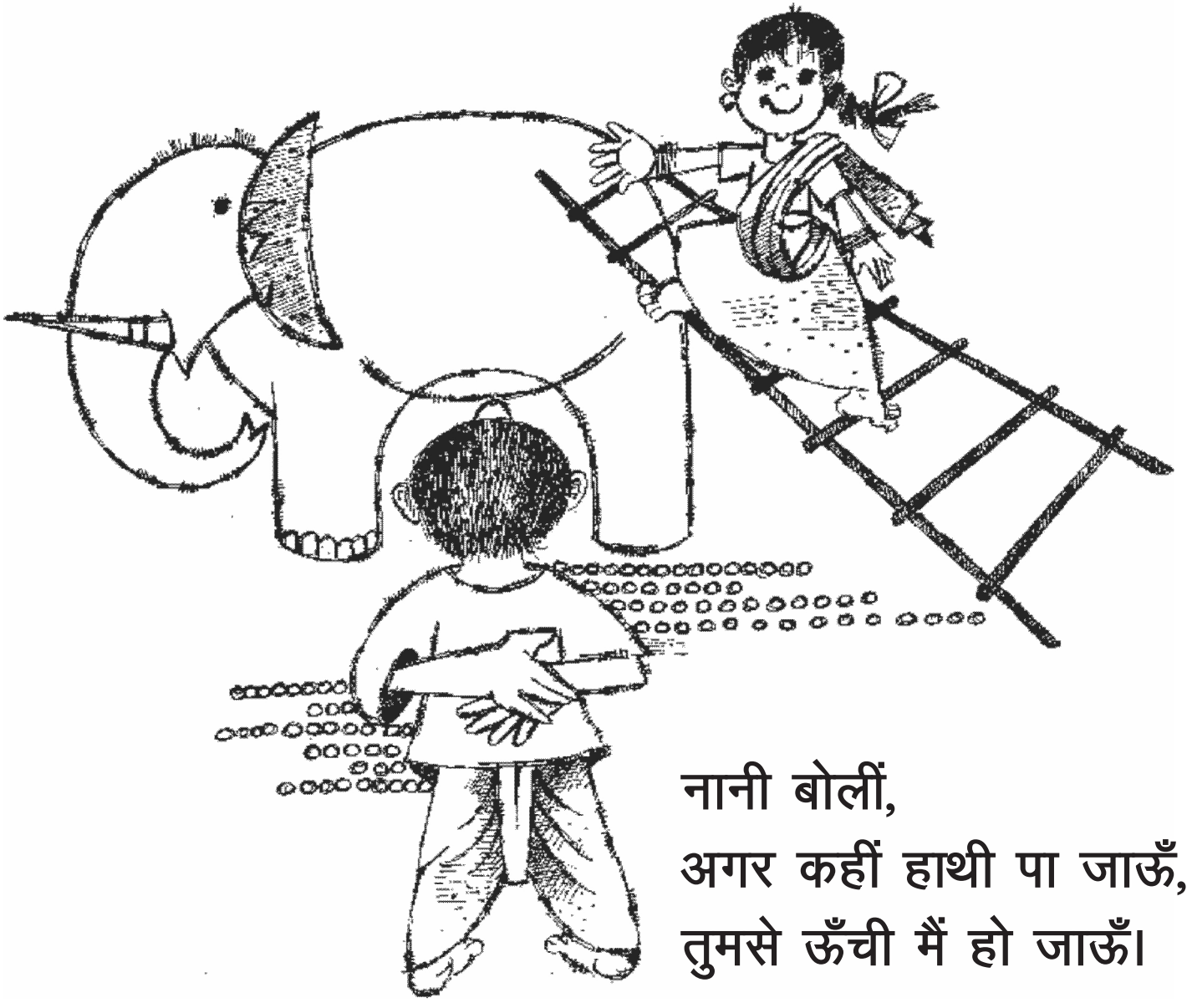

नानी बोलीं,
अगर कहीं हाथी पा जाऊँ,
तुमसे ऊँची मैं हो जाऊँ।

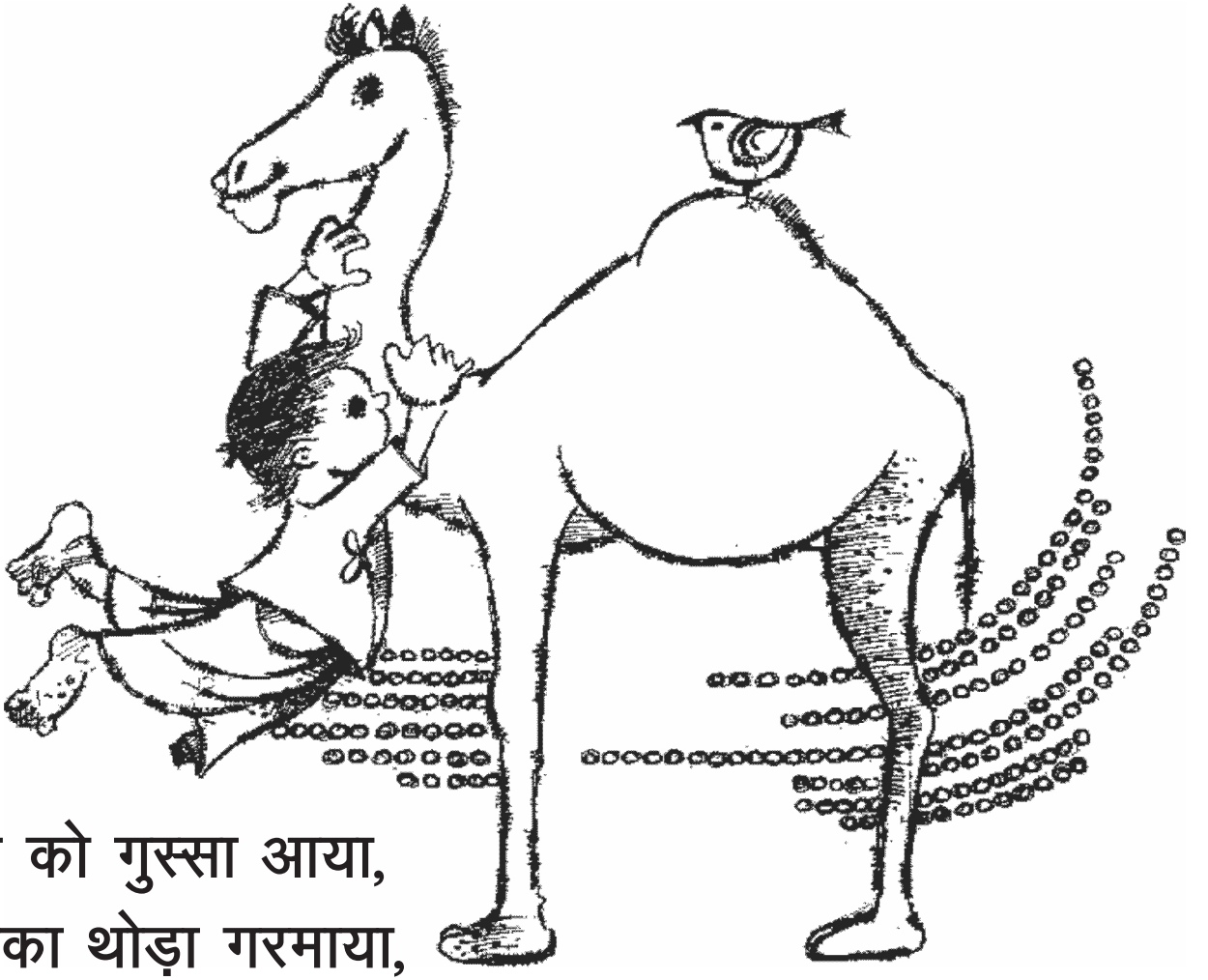

नाना जी को गुस्सा आया,
सिर उनका थोड़ा गरमाया,
यदि ऊँट पर चढ़ जाऊँ मैं,
सबसे ऊँचा हो जाऊँ मैं।

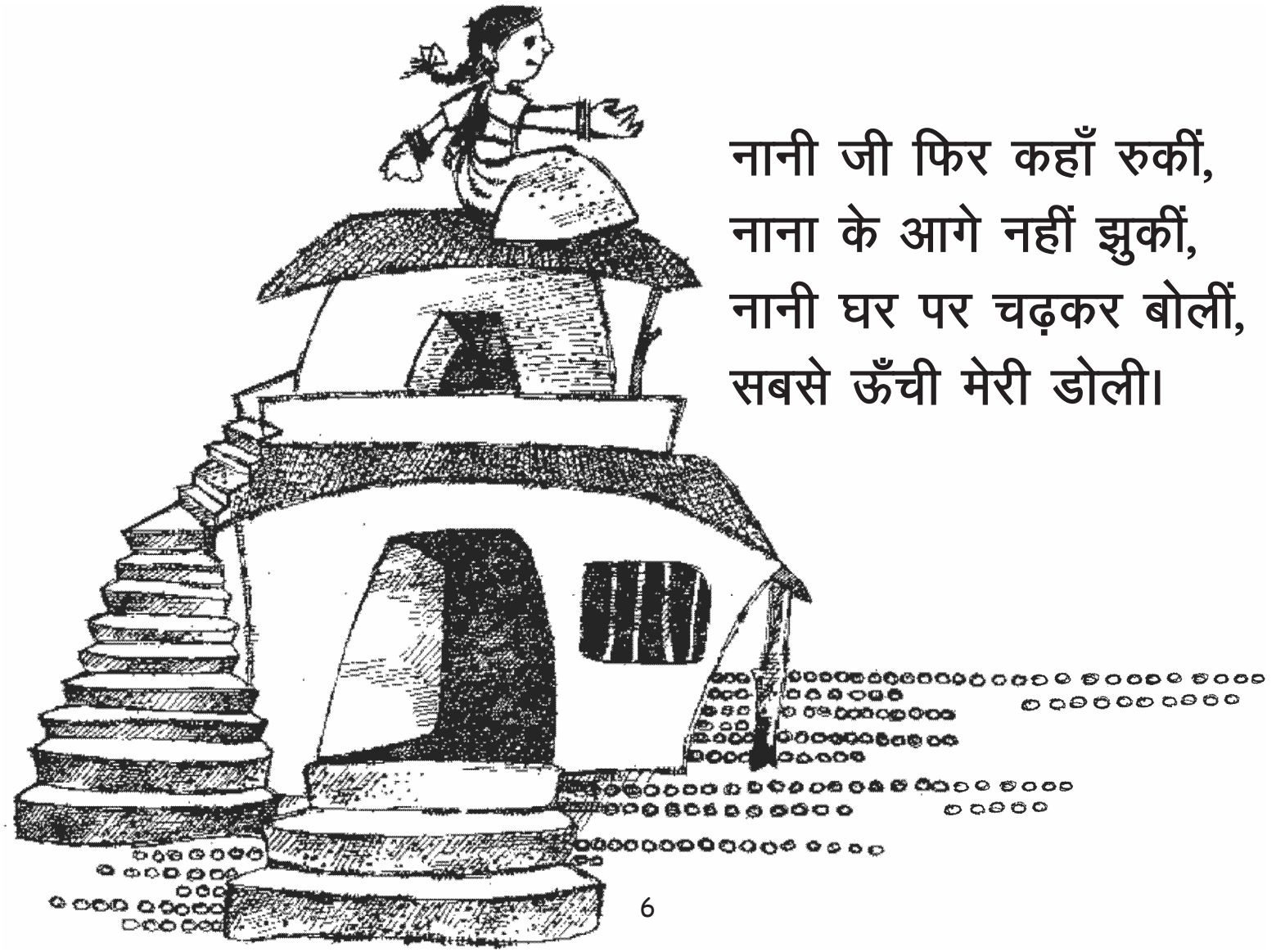

नानी जी फिर कहाँ रुकीं,
नाना के आगे नहीं झुकीं,
नानी घर पर चढ़कर बोलीं,
सबसे ऊँची मेरी डोली।

नाना जी ने दौड़ लगा दी,
भागे-भागे, ज़ोर से भागे,
ज़ोर से भागे, ज़ोर से भागे।

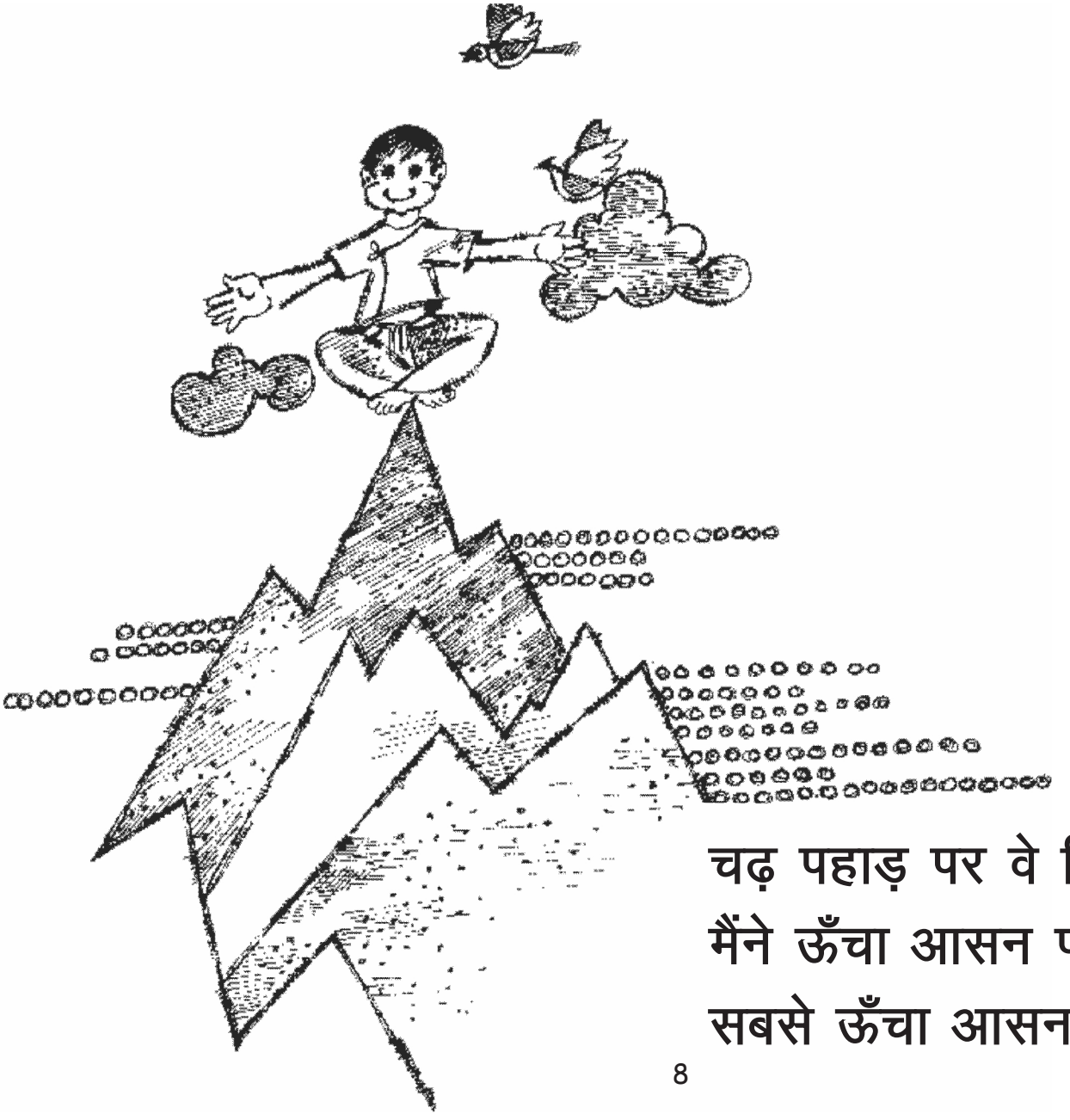

चढ़ पहाड़ पर वे चिल्लाए,
मैंने ऊँचा आसन पाया,
सबसे ऊँचा आसन पाया।

नानी चाँद पे चढ़कर बोलीं,
सबसे ऊँची मेरी डोली,
बादल जैसी मेरी डोली।

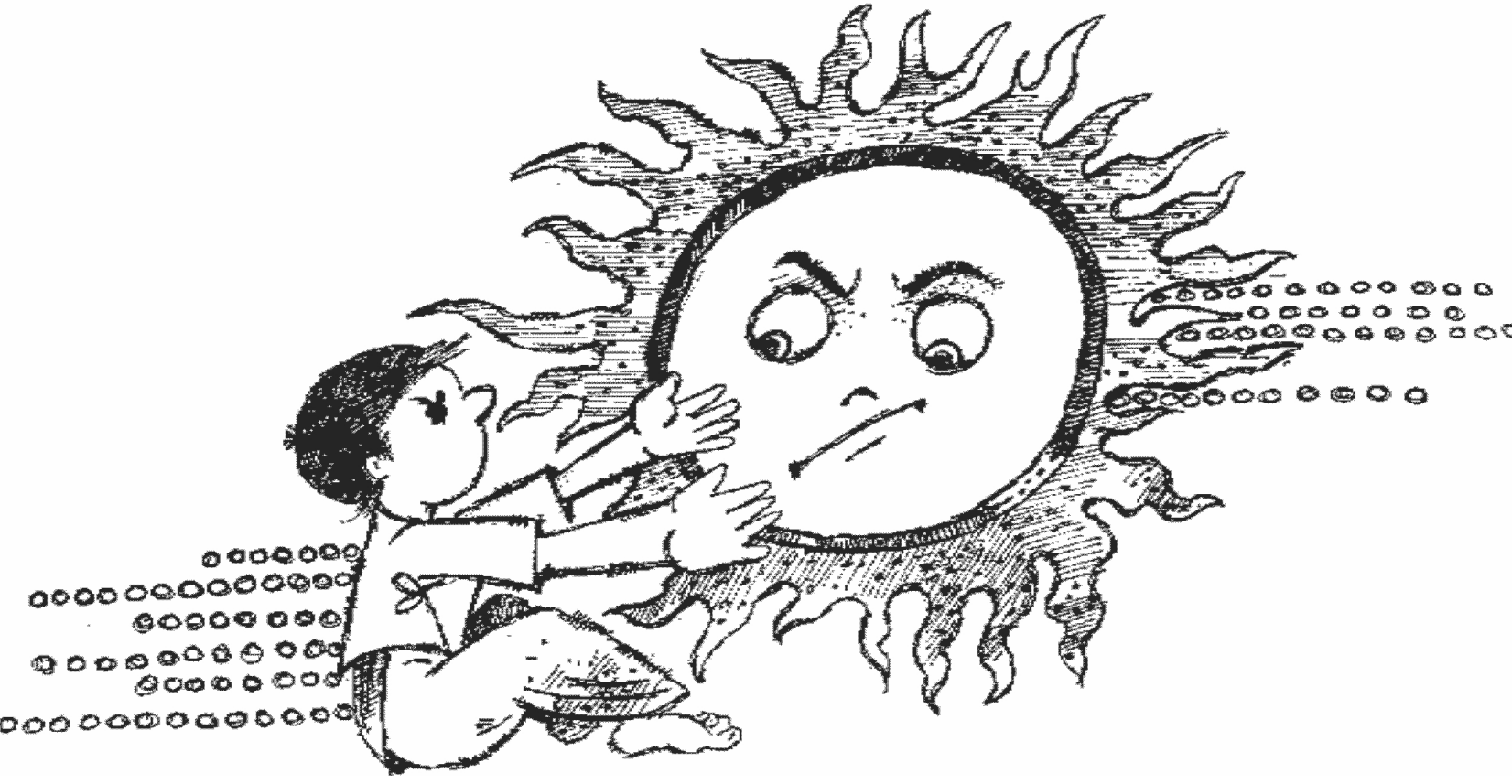

नाना जी मन ही मन बोले,
इससे ऊँचा होगा क्या?

नाना जी सूरज तक दौड़े,
गरम लगा, चिल्लाकर बोले,
जल गया..... आ! आ!

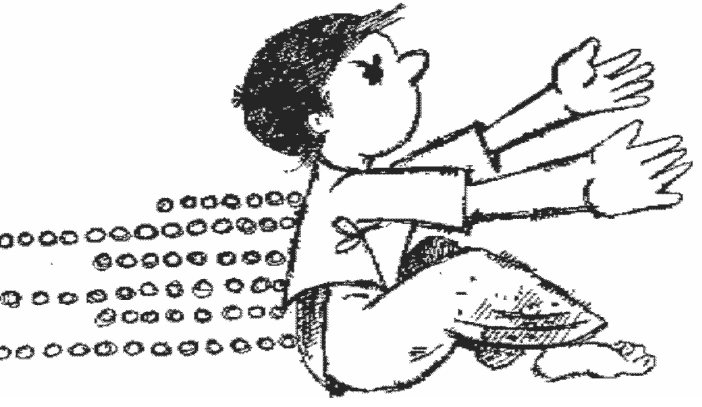

नहीं बनना है तुमसे ऊँचा,
नानी अब तू नीचे आजा,
नानी अब तू नीचे आजा।

नाना-नानी कौन हैं?

नाना-नानी दरअसल तुम्हारी ही तरह के दो बच्चे हैं – एक लड़का और एक लड़की। मध्य प्रदेश में, जहाँ एकलव्य संस्था काम करती है, कुछ इलाकों की भाषा पर गुजराती और मालवी का प्रभाव है। इन भाषाओं में "नाना-नानी" का मतलब है, छोटा-छोटी। अक्सर छोटे बच्चों को नाना-नानी कहकर पुकारा जाता है। गुजराती में अगर कहना हो कि "छोटी बच्ची है", तो कहेंगे, "नानी छोकरी छे"।

जब यह कविता लिखी गई थी, तब हम मध्य प्रदेश के एक हिस्से में बच्चों के पढ़ने के लिए भाषा की एक किताब तैयार कर रहे थे – नाम था खुशी-खुशी। धीरे-धीरे यह किताब एक ज़्यादा बड़े इलाके में फैलती गई। तब हमने देखा कि कई लोग इस कविता के "नाना-नानी" को उसके हिन्दी के प्रचलित अर्थ (माँ के माता-पिता) के रूप में समझ रहे हैं। मज़ेदार बात यह है कि इस नए अर्थ में भी, बच्चे और बड़े दोनों ही इसका भरपूर मज़ा ले रहे थे।

इस कविता के सरल शब्दों, भाषा के साथ चुहलबाज़ी और रूठने-मनाने के सहज भावों में तुम्हें मज़ा आएगा, यह सोचकर अब हम इस कविता को एक चित्रकथा का रूप दे रहे हैं। उम्मीद है कि तुम जैसे पढ़ाकुओं के पास से यह और-और आगे तक पहुँचेगी।

जब इस कविता के जन्म और बाद के बदलाव की कहानी हमने अपने चित्रकार दोस्त धनंजय को बताई तो उन्होंने इस कहानी को पिरोते हुए इसके चित्र बनाए। और कविता के लेखक घनश्याम तिवारी ने इस नए प्रयोग के लिए हमें खुशी-खुशी इजाज़त भी दे दी।

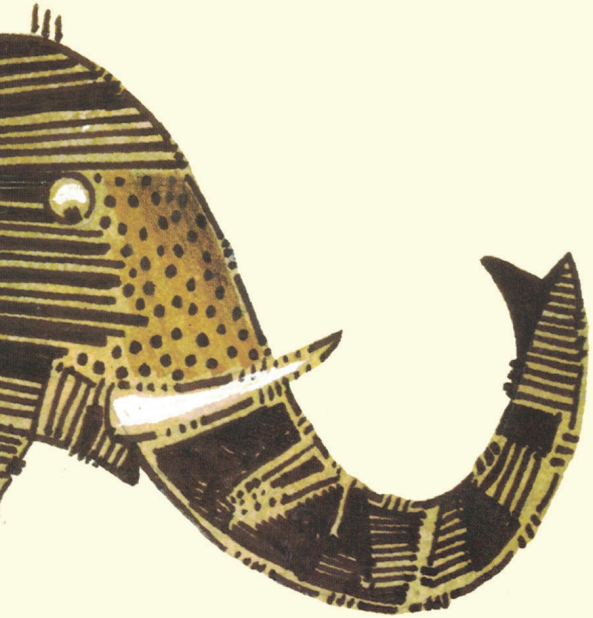

पढ़ना सीख रहे बच्चों को कहानियों की बड़ी तलाश रहती है। अपने इस नए सीखे हुनर को तराशने के लिए! कुछ गिने-चुने पात्र, थोड़े-से शब्द, बारीकियाँ लिए खूब सारे चित्र जो नज़रों और मन के रुकने के लिए ठौर बन जाएँ... चित्रकथाएँ इस ज़रूरत को पूरा करने में एकदम खरी उतरती हैं। तभी तो चित्रकथाएँ अक्सर बच्चों की जीवन भर की दोस्त बन जाती हैं!

एकलव्य

मूल्य: ₹ 30.00

9 788187 171874